क्रिप्टोलॉजी

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ टेलीमैटिक्स (C-DOT) द्वारा 'क्रिप्टोलॉजी पर राष्ट्रीय कार्यशाला (NWC)' का आयोजन किया गया।

प्रमुख बिंदु

- कार्यशाला का आयोजन 'आजादी का अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में किया गया था।
- **विषय-** 'संचार नेटवर्क में सुरक्षा और गोपनीयता बढ़ाने के लिए क्रिप्टोलॉजी में उन्नति'।
- **उद्देश्य-** पोस्ट-क्वांटम, साइबर सुरक्षा, क्वांटम कंप्यूटिंग क्रिप्टोग्राफी में फैले क्रिप्टोलॉजी के क्षेत्र में विभिन्न समकालीन विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए मंच प्रदान करना।
- क्रिप्टोग्राफी, या क्रिप्टोलॉजी प्रतिकूल व्यवहार की उपस्थिति में सुरक्षित संचार के लिए तकनीकों का अभ्यास और अध्ययन है।

क्रिप्टोग्राफी और क्रिप्टोलॉजी के बीच अंतर

- **क्रिप्टोग्राफी -** क्रिप्टोग्राफी कोड के उपयोग के माध्यम से सूचना और संचार की रक्षा करने की एक विधि है, ताकि जिनके लिए जानकारी भेजी जानी है, वे इसे पढ़ और संसाधित कर सकें।
- क्रिप्टोलॉजी, क्रिप्टोग्राफी की जनक है।
- **क्रिप्टोलॉजी:**
- क्रिप्टोलॉजी गणित है, जैसे- संख्या सिद्धांत एवं सूत्र और एल्गोरिदम का अनुप्रयोग, जो क्रिप्टोग्राफी और क्रिप्ट विश्लेषण को रेखांकित करता है।
- क्रिप्ट विश्लेषण अवधारणा अत्यधिक विशिष्ट और जटिल है, इसलिए यह चर्चा क्रिप्टोग्राफी के पीछे की कुछ प्रमुख गणितीय अवधारणाओं के साथ-साथ इसके उपयोग के आधुनिक उदाहरणों पर ध्यान केंद्रित करेगी।

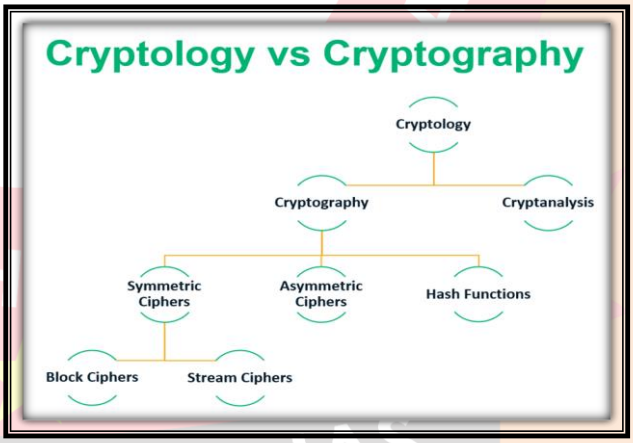

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने जलवायु संकट एवं तेजी से तकनीकी विकास के लिए PMFBY में किसान-समर्थक परिवर्तन करने का प्रयास किया गया है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

- यह केंद्र द्वारा प्रायोजित फसल बीमा योजना है।
- **विशेषता -** योजना के कार्यान्वयन में शामिल सभी सेवाओं के सेवा कर की देनदारी में छूट मिलेगी।
- सरकारी सब्सिडी की कोई ऊपरी सीमा समाप्त की गयी, चाहे शेष प्रीमियम 90% हो, यह सरकार द्वारा वहन किया जाएगा।
- तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा और किसानों को भुगतान में देरी कम करने के लिए फसल कटाई के डेटा को कैप्चर और अपलोड करने के लिए स्मार्टफोन का उपयोग किया जाएगा। फसल कटाई प्रयोगों की संख्या को कम करने के लिए रिमोट सेंसिंग का उपयोग किया जाएगा।
- **जोखिम:** बुवाई, रोपण और अंकुरण की विफलता का जोखिम, खड़ी फसल की विफलता का जोखिम, फसल के बाद के नुकसान का जोखिम, आपदाओं से सुरक्षा।
- **बहिष्करण -** युद्ध, परमाणु जोखिमों, दुर्भावनापूर्ण क्षति और अन्य रोके जाने योग्य जोखिमों के कारण अधिसूचित बीमित फसलों को नुकसान या क्षति को कवरेज के दायरे से बाहर रखा गया है।
- **कवरेज:** खाद्य फसलें (अनाज, बाजरा और दालें), तिलहन, वार्षिक वाणिज्यिक / वार्षिक बागवानी फसलें।
- **प्रीमियम:**
- सभी खरीफ फसलों के लिए किसानों द्वारा भुगतान किया जाने वाला केवल 2% और सभी रबी फसलों के लिए 1.5% का एक समान प्रीमियम होगा।
- वार्षिक वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के मामले में, किसानों द्वारा भुगतान किया जाने वाला प्रीमियम केवल 5% होगा।

सोफ्टशेल कछुआ

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में पनामा में संपन्न CITES कन्वेंशन के COP-19 में लीथ के सोफ्टशेल कछुए को भारत द्वारा परिशिष्ट II से परिशिष्ट I में शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया।

सोफ्टशेल कछुआ के बारे में

- आकार में बड़ा और ताजे पानी में पाया जाने वाला जीव है। सामान्यतः पर यह नदियों और जलाशयों में रहता है।
- यह प्रायद्वीपीय भारत की स्थानिक प्रजाति है।
- यह गोदावरी से लेकर कावेरी, तुंगभद्रा, घाटप्रभा आदि के जल निकासी क्षेत्रों में पाया जाता है।
- IUCN की लाल सूची में 'गंभीर रूप से संकटग्रस्त' के रूप में सूचीबद्ध है।
- वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची IV में सूचीबद्ध है।
- CITES के परिशिष्ट I में सूचीबद्ध है।

CITES

- यह वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन के लिए कार्य करता है जो खतरे में पड़ी प्रजातियोंके अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को विनियमित करने या प्रतिबंधित करने के लिए एक वैश्विक समझौता है।
- **परिशिष्ट I-** CITES द्वारा इसमें जानवरों एवं पौधों की उन प्रजातियों को शामिल किया जाता है जो सबसे अधिक संकटग्रस्त हैं। उदाहरण के लिए, गोरिल्ला, समुद्री कछुए इत्यादि।

- **परिशिष्ट II-**इसमें उन प्रजातियों को सूचीबद्ध किया जाता है जिनके विलुप्त होने का खतरा नहीं है, लेकिन यदि इनके व्यापार को नियंत्रित नहीं किया गया, तो खतरा बन सकता है; जैसे- पैडलफिश, शेर, अमेरिकी मगरमच्छ इत्यादि।
- **भारत का तर्क -**भारत के भीतर अवैध रूप से इसका माँस के लिए और इसके कैलीपी के लिए शिकार किया गया।
- इस कछुए की प्रजाति की आबादी में पिछले 30 वर्षों में 90% की गिरावट का अनुमान लगाया गया है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS)

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के अंतर्गत आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के अनुसार भारत की बेरोजगारी दर घटकर 7.2% हो गई है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के बारे में:

- श्रम बल डेटा की उपलब्धता के महत्व को ध्यान में रखते हुए NSO ने 2017 में आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) शुरू किया।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण का उद्देश्य:

- वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (CWS) में शहरी क्षेत्रों के लिए प्रत्येक तीन महीने के समयांतराल में प्रमुख रोजगार और बेरोजगारी संकेतकों अर्थात श्रमिक जनसंख्या अनुपात, श्रम बल भागीदारी दर, बेरोजगारी दर का अनुमान लगाना।
- सालाना ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में 'सामान्य स्थिति' और CWS दोनों में रोजगार और बेरोजगारी संकेतकों का अनुमान लगाना।
- CWS के तहत एक व्यक्ति बेरोजगार होगा ,जब उसने उस सप्ताह के दौरान किसी भी दिन एक घंटे भी काम न किया हो।
- इसके अनुसार शहरी क्षेत्रों में महिलाओं (15 वर्ष और उससे अधिक आयु) की बेरोजगारी दर जुलाई-सितंबरमें कम आई है।
- बेरोजगारी दर या बेरोजगारी को श्रम बल के बीच बेरोजगार व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है।
- शहरी क्षेत्रों में पुरुषों में, बेरोजगारी दर जुलाई-सितंबर, 2022 में घटकर 6.6 % हो गई, जबकि 2021 में यह 9.3 % थी। अप्रैल-जून, 2022 में यह 7.1 फीसदी थी।

लचित बोरफुकन

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में असम के अहोम साम्राज्य के सेनापति लचित बोरफुकन की 400वीं जयंती 23 से 25 नवंबर, 2022 तक नई दिल्ली में मनायी गयी।

लचित बोड़फुकन के बारे में :

- **जन्म-** 24 नवंबर,1622 को हुआ था।उनका धर्म फुरेलुंग अहोम था।
- लचित बोरफुकन (पूरा नाम- चाउ लचित फुकनलुंग) अहोम साम्राज्य के एक सेनापति थे, जो सन 1671 में हुई **सराईघाट की लड़ाई** में अपनी नेतृत्व-क्षमता के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने असम पर पुनः अधिकार प्राप्त करने के लिए रामसिंह प्रथम के नेतृत्व वाली मुग़ल सेनाओं का प्रयास

विफल कर दिया गया था।

- उनके प्रयासों से ही भारतीय नौसैनिक शक्ति को मज़बूत करने, अंतर्देशीय जल परिवहन को पुनर्जीवित करने और नौसेना की रणनीति से जुड़े बुनियादी ढाँचे के निर्माण की प्रेरणा मिली थी।
- राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (National Defence Academy) के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को लचित बोरफुकन स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है।
- **मृत्यु -**25 अप्रैल, 1672 को।

अहोम साम्राज्य:

- असम की ब्रह्मपुत्र नदी घाटी में वर्ष 1228 में स्थापित अहोम साम्राज्य ने 600 वर्षों तक अपनी संप्रभुता बनाए रखी। साम्राज्य की स्थापना 13वीं शताब्दी के शासक चाओलुंग सुकफा ने की थी।
- **यंदाबू की संधि** पर हस्ताक्षर के साथ वर्ष 1826 में प्रांत को ब्रिटिश भारत में शामिल किये जाने तक इस भूमि पर अहोमों ने शासन किया।
- अहोम राज्य बंधुआ मज़दूरी/बलात श्रम पर निर्भर था। राज्य के लिये इस प्रकार की मज़दूरी करने वालों को पाइक (Paik) कहा जाता था।
- अहोमों ने ज़मींदारों की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था को समाप्त करके एक नए राज्य का निर्माण किया। यहाँ समाज को कुल/खेल में विभाजित किया गया था। एक कुल/खेल का सामान्यतः कई गाँवों पर नियंत्रण होता था।
- अहोम साम्राज्य के लोगों ने आदिवासी देवताओं की पूजा के साथ हिंदू धर्म और असमिया भाषा को स्वीकार किया।
- अहोम राजाओं ने कवियों और विद्वानों को भूमि अनुदान की तथा रंगमंच परंपरा को प्रोत्साहित किया।
- बुरंजी नामक ऐतिहासिक कृतियों को अहोम भाषा और असमिया भाषा में लिखा गया है ।
- अहोम राजा , सेना का सर्वोच्च सेनापति होता था। युद्ध के समय सेना का नेतृत्त्व राजा स्वयं करता था और पाइक राज्य की मुख्य सेना थी।
- पाइक दो प्रकार के होते थे: सेवारत और गैर-सेवारत। गैर-सेवारत पाइकों ने एक स्थायी सहायक सेना का गठन किया, जिन्हें खेलदार द्वारा थोड़े ही समय में संगठित किया जा सकता था। अहोम सैनिकों को गोरिल्ला युद्ध पद्धति में विशेषज्ञता प्राप्त थी।

KARMANYEVADHIKARASTE MAA PHALESHU KADAACHAN THE STUDY An Institute for IAS